

## निगाहें मिलाने को जी चाहता है

किसी से नज़र टकरा जाए तो एक खास एहसास क्यों होता है? लगता है दिमाग का एक हिस्सा इस आंखों-ही-आंखों में इशारे के लिए ज़िम्मेदार है। कम से कम मेकॉक बंदरों में वैज्ञानिकों



कहती है। इनमें से चार तंत्रिकाएं ऐसी भी थीं जो तभी सक्रिय होती थीं जब पर्दे का मेकॉक बाहर बैठे मेकॉक की आंखों में घूरता नज़र आता था, गोया उन दोनों की आंखें टकराई हों।

ने दिमाग का वह हिस्सा खोज निकाला है जो आंखें मिलने पर होने वाले एहसास का स्थान है।

यह खोज एरिज़ोना विश्वविद्यालय की तंत्रिका विशेषज्ञ केटालिन गोथार्ड व साथियों ने की है। उन्होंने एक रीसस मेकॉक के दिमाग के एमिग्डेला नामक हिस्से में सात निहायत महीन इलेक्ट्रोड लगा दिए। इन इलेक्ट्रोड की मदद से वे मेकॉक के उस हिस्से के एक-एक न्यूरॉन की गतिविधि पर नज़र रख सकते थे। इस मेकॉक बंदर को एक अन्य मेकॉक की वीडियो फिल्म भी दिखाई गई। फिल्म देखते समय उसकी आंखों की दिशा वगैरह पर लगातार नज़र रखी गई।

शोधकर्ता जिन 151 तंत्रिकाओं की गतिविधि को अलग-अलग कर पाए, उनमें से 23 ऐसी थीं जो उसी समय सक्रिय होती थीं जब मेकॉक पर्दे पर दिख रहे मेकॉक की आंखों को देखता था। इन्हें गोथार्ड की टीम 'नेत्र कोशिका'

इस प्रयोग के आधार पर गोथार्ड का कहना है कि जैव विकास की प्रक्रिया में ऐसी तंत्रिका कोशिकाएं अस्तित्व में आई हैं जो आंखों को देखती हैं और आपके बारे में जानकारी जुटाती हैं। खास तौर से ये तंत्रिकाएं यह देखती हैं कि क्या आप आंखें मिला रहे हैं।

अब यह कहना असंगत न होगा कि मनुष्यों में भी ऐसी तंत्रिकाएं होंगी। फिलाडेल्फिया विश्वविद्यालय की मार्था फलाह का कहना है कि मनुष्य और बंदरों के दृष्टि तंत्र में काफी समानताएं हैं। अब गोथार्ड की टीम यह देखने की कोशिश करेगी कि क्या कुछ दवाइयां मेकॉक की इन कोशिकाओं की सक्रियता को बढ़ाती हैं। इससे कुछ सुराग मिलने की संभावना है कि उन बीमारियों के उपचार में क्या किया जाए जिनमें व्यक्ति आंखें चुराने की कोशिश करते हैं। मगर उससे पहले इन कोशिकाओं के बारे में काफी कुछ समझने की ज़रूरत होगी। (स्रोत फीचर्स)